



मध्यभारत की कला, संस्कृति एवं पुरातत्त्व

नागेश दुबे
मोहन लाल चट्टार

Published by
Satparkash Katla
SSDN PUBLISHERS AND DISTRIBUTORS
5A, Sahni Mansion, Ansari Road
Daryaganj, New Delhi 110002 (India)
Ph: 011-47520102
E-mail: ssdn.katla@gmail.com
www.ssdnbooks.com

मध्यभारत की कला, संस्कृति एवं पुरातत्व

© प्रो. नागेश दुबे एवं डॉ. मोहन लाल चढार

₹ 3500

सर्वाधिकार सुरक्षित। पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में पुनर्प्रकाशित नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण 2017

ISBN: 978-93-8357-598-5

Printed at New Delhi, India

इस पुस्तक में प्रकाशित आलेख, लेखकों के अपने विचार हैं, इन विचारों से सम्पादकगण प्रकाशक अथवा मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है

10. बटेसर के कृष्ण लीला-फलक डॉ. शान्तिदेव सिसौदिया एवं लल्लेश कुमार	65
11. छत्तीसगढ़ की सोमवंशकालीन जैन-कलाकृतियाँ श्री प्रसन्न सहारे	74
12. छत्तीसगढ़ की अभिकल्प परम्परा में मार्जर व्याल (कलचुरिकाल के विशेष संदर्भ में) डॉ. आशुतोष चौरे	82
13. बुन्देली संस्कृति और अम्बिकाप्रसाद 'दिव्य' के उपन्यास प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	89
14. बुन्देली कहावतें, मुहावरें, पहेलियों में प्रतिबिम्बित बुन्देली संस्कृति प्रो. बी.के. श्रीवास्तव	98
15. तुमैन उत्खनन से प्राप्त श्रृंगार सामग्रियों की सांस्कृतिक समीक्षा सुल्तान सलाहुद्दीन	105
16. बुन्देली संस्कृति का दर्पण : आल्हाखंड विशाल विक्रम सिंह एवं डॉ. आर. पी. सिंह	109
17. चन्देलकालीन आर्थिक जीवन (अभिलेखों के परिप्रेक्ष्य में) डॉ. अर्चना मिश्रा	114
18. त्रिपुरी क्षेत्र की धार्मिक परम्पराएँ डॉ. रामकुमार अहिरवार	124
19. कलचुरिकालीन समाज में नारी की स्थिति (कलचुरि अभिलेखों के विशेष सन्दर्भ में) प्रो. आर. एन. विश्वकर्मा	148
20. पूर्वमध्यकालीन मध्यभारत में स्त्री प्रतिरूपों का अवलोकन डॉ० सुरेन्द्र कुमार यादव	154
21. मध्यप्रदेश के शक्तिपीठों की सांस्कृतिक उपादेयता शैला यादव	163
22. कलचुरिकाल में सौर सम्प्रदाय प्रो. नवीन गिडियन	169

द्वितीय खण्ड

मध्यभारत का पुरातत्त्व

23. बुन्देलखण्ड का पुरातत्त्व प्रो. कृष्ण कुमार त्रिपाठी	175
24. अमरकंटक क्षेत्र के सर्वेक्षण व उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों का विश्लेषण प्रो. आलोक श्रोत्रिय एवं डॉ. मोहन लाल चढार	186

14 बुन्देली कहावतें, मुहावरें, पहेलियों में प्रतिबिम्बित बुन्देली संस्कृति

प्रो. बी.के. श्रीवास्तव

बुन्देली लोक साहित्य में कहावतों (लोकोक्तियों) मुहावरों, पहेलियों की भरमार मिलती है। हम यह भी कह सकते हैं कि उनका बुन्देली लोक साहित्य में विशिष्ट स्थान है। कहावतें, गागर में सागर भरने का कार्य करती हैं। यही बात मुहावरों के संदर्भ में भी कही जा सकती है। मुहावरे अपना लक्षणा या व्यंजना मूलक अर्थ रखते हैं। इनका पूर्ण अर्थ तभी स्पष्ट होता है जब इनका वाक्य में प्रयोग किया जाता है। कहावतों की भाँति इनका स्वतंत्र अर्थ नहीं होता। यही कहावत एवं मुहावरे में मुख्य अंतर है। बुन्देलखण्ड में कई पहेलियाँ भी प्रचलित हैं, जिनका उत्तर खोजने में मस्तिष्क को व्यायाम करना पड़ता है। बुन्देलखण्ड में ज्योतिष बताने वाली भी कतिपय कहावतें प्रचलित हैं। कई कहावतों का संबंध स्वास्थ्य से भी है। कहावतों में यह तथ्य निहित रहता है कि स्वस्थ जीवन के लिये क्या खाये क्या न खायें।

बुन्देली कहावतें:

बुन्देलखण्ड में कहावतों को कौनाते, कहनेत, टउका या अहाना भी कहते हैं। कतिपय कहावतों के पीछे कुछ संक्षिप्त लोक कथाएँ भी जुड़ी होती हैं। अहाने किसी कहावत के केन्द्रीय भाव पर आधारित लघु लोक कथा होती है।¹ अहाने में व्यंग की प्रधानता होती है। इन्हें कहावत की व्याख्यात्मक प्रस्तुति कह सकते हैं। इसी तरह टउका या टहूका थोड़े से बड़े आकार के चुटकुले होते हैं। इनका प्रमुख उद्देश्य मनोरंजन होता है। अधिकांशतः यह किसी लोकोक्ति या मुहावरे से संबद्ध होते हैं। इन पर आधारित कहावत या मुहावरे को इनके पीछे अन्तर्निहित कथा के बिना समझा नहीं जा सकता।² ऐसी कहावतों के पीछे की कथा जानकर सुनने वाला अत्याधिक आनन्द का अनुभव करता है।

बुन्देलखण्ड में जो दूध बेचने वाले, दूध में पानी मिलाकर बेचते हैं उन पर व्यंग कसने वाली एक कहावत प्रचलित है, जो इस प्रकार है—

‘पानी कौ धन पानी में, नाक कटी बेईमानी में’

इस कहावत के पीछे का अहाना (कथा) इस प्रकार है—एक दूध बेचने वाली दूध में पानी मिलाकर बेचने की आदत से मजबूर थी। दूध में पानी मिला-मिला कर बेच कर उसने अत्याधिक धन संग्रहित कर